जनाबे ज़ैनब अ0

डॉ0 नय्यर मस्ऊद साहब

बसते रहे सब तेरे बसरे कूफ़े
और नैज़े पर बाज़ारों बाज़ारों गुज़रा सर,,,,,,,,सरवर का
क़ैद में मंज़िलों मंज़िलों रोयी बेटी शाहे अरब की
हो गया नक्शे नगीं मुहरे नबूवत का हुसैन
मुहर ऐसी हो, नंगीं ऐसा हो, नाम ऐसा हो
सरे शह नैज़े पे था सारे सरों के आगे
बादे मुरदन भी इमामत थी, इमाम ऐसा हो

रावी नं0 1—: सदियों पहले कूफ़े व शाम के बाज़ारों में एक अजीब व ग़रीब जुलूस गश्त करता है। यह फ़त्ह का जुलूस है और इस फ़त्ह की निशानी हारे हुये लश्कर से सिपाहियों के सर हैं जो नैजों पर बलन्द किये गये हैं।

रावी नं0 2—: लेकिन नैज़ों पर बुलन्द खूं आलूद सरों का यह जुलूस खूद एक लश्कर है जो अपनी फ़त्ह का एलान करता मालूम होता है।

रावी नं0 1—: और तमाशाई उन सरों को देखकर हैरान हैं कि यह कौन लश्करी है जिन के चेहरों पर मरने के बाद भी जलालत बाक़ी है जिनके सूखे हुए होंटों से जांकनी की अज़ीयत नहीं, अबदी सुकून की मुसकराहट जाहिर है, जिन की आंखो में मौत की बेनूरी नहीं, जाविदां कामयाबी की चमक हैं।

रावी नं0 2—: इन में कमसिन लड़कों के सर भी हैं जवानों के भी सर हैं, और बूढ़ों के भी सर हैं।

रावी नं0 1—: तमाशाई इन सरों को देर तक देखने की ताब नहीं ला सकते और उनकी निगाहें उस लश्कर के जंगी कैदियों की तलाश मैं नीचे आती हैं।

रावी नं0 2—: और अब वह पहले से भी ज़ियादा हैरान होते हैं उन्हें उन कैदियों में खूँखार सिपाहियों के ग़ोल नज़र नहीं आते बलकि उनके सामने सितम रसीदा क़ाफ़िले का मंज़र है।

रावी नं0 1—: इस काफिले में एक बीमार नौजवान है, कुछ सहमे हुए बच्चे हैं और वह अिफ़्फ़त मआब ख़वातीन हैं जिन के चेहरों से ज़ाहिर है कि वह बाज़ारों में बे पर्दा निकलने की आदी नहीं है।

रावी नं0 2—: लेकिन यह सितम रसीदा काफ़िला भी एक लश्कर है जो इन्ही बाज़ारों से अपनी फ़ुतूहात का आग़ाज़ कर चुका है।

रावी नं0 1—: और इस लश्कर से एक आवाज़ बलन्द होती है

रावी नं0 2—: इस आवाज़ में फ़रयाद भी है और तंबीह भी, तमाशाई इस आवाज़ कीं तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं और उनकी आंखें खुलती चली जाती है।

रावी नं0 1—: यह आवाज़ तमाशाईयों को बताती है कि उनके सामने हुकूमत के बाग़ियों की हारी हुई फौज नहीं बल्कि जिगर गोश—ए—रसूल (स0) हुसैन बिन अली (अ0) और उनके अंसार व अक़्रुबा के सर और उनके अहले बैत की लुटी हुई जमाअत है।

रावी नं0 2—: और तमाशाईयों को यह भी मालूम हो जाता है कि आवाज़ ज़ैनब की है।

रावी नं0 1—: मज्मअ—ए—आम में जनाबे ज़ैनब की आवाज़ बलन्द है और आंखें झुकी हुई हैं।

रावी नं0 2—: इन आँखों ने क्या क्या देखा है और अभी इन्हें क्या क्या देखना है !

सलामी कहते थे आदा रूलाओ ज़ैनब को
सरे हुसैन सिनां पर दिखाओ ज़ैनब को
हुसैन इमाम को जिससे किया गया है शहीद
वह खूँ भरा हुआ ख़ंजर दिखाओ ज़ैनब को
हुसैन जीता नहीं जो हिमायत उस की करे
सताया जाय जहाँ तक सताओ ज़ैनब को
पकड़ के लाये हैं ख़ैबर शिकन की बेटी को
यह कह के शाम में दरदर फिराओ ज़ैनब को

रावी नं0 1—: ख़ैबर शिकन की बेटी, फ़ातिमा ज़हरा की लाडली, पैग़म्बरे इसलाम की निवासी........

मुजरई ! रहती थी तौक़ीर से घर में ज़ैनब
सरबरहना हुई अफ़सोस सफ़र में ज़ैनब
घर से बाहर कभी ज़हरा का न निकला था क़दम
सर खुले रोती फिरी वादी व घर में ज़ैनब

रावी नं0 2–: ख़ानवाद–ए–रिसालत की मुकद्दस ख़ातून ज़ैनब जिस का नाम सुनकर नज़रें अदब से झुक जाया करती थीं।

मगर तेरे लिये था हाय एक वह दिन पड़ाव
वह वन, वोरेत, वह लाशें, वह बे कसों के ख़याम
सियह हवाअें ज़मानें के शामियानों में शाम
मरे हुओं की सफें और डरें हुओं के ख़याम
मुहीते आहने बुर्रा के सामने यकता
फ़सील जिसकी अमाँ में थे गम ज़दों के ख़याम
तेरी ही बर्के सदा की कड़क से काँप गये
ये ज़ेरे चर्ख़े मुतल्ला शहन्शहों के ख़याम
जहाँ प साया कुनाँ है तेरे शरफ़ की रिदा
उखड़ चुके है तेरे ख़ैमः अफगनों के ख़याम

रावी नं0 1–: करबला के गिरे हुए ख़ैमों से निकलने वाले इस क़ाफ़िले की सालार जनाबे ज़ैनब की आंखों में अभी तक वह मंज़र फिर रहा है जो उन्होंने असीर होकर मैदाने करबला से निकलते हुए देखा था इसलिये कि उन को उस गंजे शहीदां की तरफ़ से लाया गया था जहाँ उनके प्यारे भाईयों, भतीजों और बेटों की बेगोर व कफ़न लाशें पड़ी थीं।

इस शक्ल से सहरा में पड़े थे वो दिलावर
जिस तरह मुरक्क़अ़ कहीं हो जाता है अबतर
सोते थे कहीं ख़ाक पे दो भाई बराबर
दूल्हा कोई पामाल था घोड़ों से सरासर
बुंदे कोई पहने हुअे पारा सा पड़ा था
रेती प कोई तिफ़्ल सितारा सा पड़ा था
सोता था लबे नहर कोई हाथ कटा था
था ख्वाबे अजल में कोई फल बरछी का खाये
ये जिस्म लहू में अ़ेवज़े गुस्ल नहाये
इतना भी न था कोई कि कब्रें तो बनाये
दम निकले थे मुश्किल से कि वो ताज़ा जवाँ थे
बाला–ए–ज़मीं पांव रगड़ने के निशाँ थे
या बीच में उन लाशों के यक लाश–ए–बेसर
गर्दन पे नुमायाँ कई जगह ख़ते ख़ंजर
था तीरों की कसरत से ये हाले तने अतहार
जिस तरह अयाँ खार हों साही के बदन पर
बख़्शा था सरे अर्श नशेमन जो खुदा ने
पर खोले थे उस औजे सआदत के हुमा ने
इफ़राते जराहत से सरापा था बदन चूर
यिक क़ब्र को मुहताज था वह साहिबे मक़दूर
थी रंगे बयाबाँ अेवज़े मरहमे काफूर
आईनए सदपारा था वह सीन–ए–पुरनूर
ज़खमों मे लहू सीने के दबने से भरा था
ज़ानू था जहाँ शिम्र का वाँ हाथ धरा था
पहलू में था यक तिफ़्ले हँसी तीर का मारा
जिस तरह से हो माह के नज़दीक सितारा
छोटा सा शलूकः था भरा खून से सारा
मालूम ये होता था कि है बाप का प्यारा
कुछ दाग जो दिल पर थे तो कुछ दाग़ जिगर पर
यिक हाथ तो सीने पे था यिक हाथ पिसर पर

रावी नं0 2–: यह था हुसैनी लश्कर का वह आख़िरी मंज़र जो ज़ैनब की आँखों ने देखा। इससे पहले आशूर की सुबह वह उसी लश्कर को आरास्ता देख चुकी थी उन्होंने देखा था कि उन के जर्रार भाई अबुल फ़ज़लिल अब्बास को इस मुखतसर लश्कर की अलमदारी मिली है और उन्होंने कर्ख़ के साथ अलम का फ़रेरा खोला है।

रावी नं0 1–: वह फरेरा जिस पर लिखा रहता था ''नसरुम मिनल्लाहिवफ़त्हुन क़रीब''

रावी नं0 2–: लेकिन सुबहे आशूर जब यह फरेरा खुला तो ज़ैनब ने देखा कि उस पर लिखा हुआ है इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहे राजेऊन और वह आने वाले मसायब के लिये तय्यार हो गयीं।

रावी नं0 1–: उन्होंने देखा कि ''72'' सिपाहियों की हुसैनी फौज परदुश्मन कापूरा लश्कर हमला करके पसपा होता है लेकिन इस हमले के नतीजे में हुसैन (अ0) की फौज के आधे से ज़ियादा सिपाही शहीद हो जाते हैं।

रावी नं0 2–: और अब एक एक सिपाही निकल कर दुश्मन से जंग करता है शुजाअत के बेमिसाल कारनामे दिखाता है और राहे हक़ में निसार हो जाता है।

रावी नं0 1–: ज़ैनब तक मैदाने जंग की एक एक ख़बर पहुँच रही थी, यहाँ तक कि उन्हें मालूम हुआ कि अब अंसारे हुसैन में से कोई बाक़ी नहीं रहा, और अब अज़ीज़ों की बारी है।

मिट्टी में मिलाया वो मुरक्क़आ जो क़ज़ा ने
सर देने को तैय्यार हुए शह के यगाने

देखा सूए अफ़लाक इमामे दोसराने
तसबीहे इमामत के बिखरने लगे दाने
सैदाानियों का दूध जो पी पी के पले थे
जल्लादों की तलवारें थी अैर उनके गले थे

रावी नं0 2—: अब मुजाहिद रुख़सत होने से पहले ख़ेमे के अन्दर आता और कुछ देर बाद उसकी लाश वापस आती, जनाबे ज़ैनब बेचैन थीं कि जल्द से जल्द अपने दोनों बेटों, औनो मुहम्मद को भाई पर कुरबान करें। मगर इमामे हुसैन (अ0) उन्हें इजाजत नहीं देते थे ज़ैनब का इज्तेराब बढ़ता जा रहा था, लेकिन आख़िर उनकी मुराद पूरी हुई।

फ़िज्ज़ा दरे ख़ैमा से यह कहती हुई आई
फ़रयाद कि अब लुटती है ज़ैनब की कमाई
लो मेरे खुजादों ने रिजा जंग की पायी
ऐ ! बिन्ते अली रो रहे हैं आप के भाई
बच्चे भी शरीके शुहदा होते हैं लोगो
दो भानजे मामूँ पे फ़िदा होते है लोगो

रावी नं0 1—: जनाबे ज़ैनब ने अपने हाथ से अपने बच्चों को जंगी लिबास पहनाया।

हुये दोनों जी जाह आरास्ता जब
बने ख़ूब दूल्हा पुकारे हरम सब
दुआ चुपके चुपके यह करती थी ज़ैनब
सर आफ़राज हों अब शहादत से यारब
निसारे शहे नेक ख़ू हो के आयें
मेरे सामने सुर्ख़रू हो के आयें
बहे रन में जिस दम लहू मेरे मालिक
न डर जायें ये माहरू मेरे मालिक
दिले शेर दे इनको तू मेरे मालिक
अता हो मुझे आबरू मेरे मालिक
बुजुर्गी हो लड़कों में रहमत से तेरी
महे नव बनें बद्र, कुदरत से तेरी

रावी नं0 2—: जनाबे ज़ैनब ने बच्चों को रुख़सत किया और ख़ामोशी के साथ इन्तेज़ार करने लगीं, अचनाक मैदाने जंग में फत्ह के बाजे बजे ख़ैमे में हल चल मच गई और थोड़ी देर बाद औनव मुहम्मद की लाशें ज़ैनब के सामने थीं, ज़ैनब ने उस मंज़र को साथ देखा और उनकी पेशानी पर बल नहीं आया।

रावी नं0 1—: लेकिन वही ज़ैनब जिन्होंने खुद अपने जिगर पारों को मरने के लिये भेजा था, अली अकबर की शहादत की ख़बर सुन कर ऐसी बेक़रार हुई कि खेमे के बाहर निकल आई।

बाहर ख़ेमे के कौन नगे सर है
शेवन जिस का हरीफ़े महशर है
कुर्बान किये दो पिसर खुशी से जिसने
बेहाल भीतीजे की शहादत पर है

रावी नं0 2—: जनाबे ज़ैनब हर शहीद का मातम भी करती रहीं और दूसरे मातमदारों को तसल्ली भी देती रहीं, प्यासे बच्चों को बहलाती भी रहीं और इमाम हुसैन (अ0) की सलामती की दुआ भी मांगती रहीं, उन्हें यक़ीन था कि जब तक हुसैनी फौज का एक भी मुजाहिद जिन्दा है उस वक्त तक उन के भाई पर आँच नहीं आ सकती और यहीं हुआ भी।

रावी नं0 1—: लेकिन ज़ुहर तक उस मुटठी भर फौज के सारे सिपाही अपने आक़ा पर निसार हो गये।

जब खातिमा बख़ैर हुआ फौजे शाह का
कौसर प क़ाफिला गया प्यासी सिपाह का
घर लुट गया जनाबे रिसालत पनाह का
ख़ाक उड़ रही थी, हाल ये था बारगाह का
भाई नवो रफ़ीक नवो नूरे अैन थे
दो बहनें रोने वालियाँ थी और हुसैन थे

रावी नं0 2—: और जनाबे ज़ैनब जिस वक्त से डर रही थीं वह आ पहुँचा।

रावी नं0 1—: इमामे हुसैन (अ0) आख़िरी रुख़सत के लिये ख़ेमे में आये, जनाबे ज़ैनब को प्यारे बेटे सय्यदे सज्जाद को वसीयतें कीं उन्हें मालूम था कि अभी जनाबे ज़ैनब को कितने मरहले सर करना है उनमें पहला बड़ा मरहला इमामे हुसैन (अ0) को रुख़सत करना था।

रावी न0 2—: फ़ौजे मुखालिफ़ ने देखा कि इमाम हुसैन (अ0) खेमे से बाहर निकले, अपने बावफ़ा घोड़े की लगाम पर हाथ रखा और देर तक ख़ामोश खड़े रहे। फ़ौजे मुख़ालिफ़ उनके सवार होने की मुंतज़िर थी और इमामे हुसैन भी किसी के मुंतज़िर थे।

रावी न0 1—: और फिर सबने देख लिया कि हुसैन को किसका इंतेज़ार था।

लिखा है याँ लजामे फरस पर था दस्ते शाह
फ़रयादे वा हुसैना से हिलती थी क़त्ल गाह

ख़ेमे से निकली यकज़ने बाला बलन्द, आह
रूख पर नक़ाब, पाँव में मोज़े, अबा सियाह
हुस्ने बुतूले शाने अली का ज़ुहूर था
गोया लिबासे काबा में ख़ालिक का नूर था
पर्दा था पर झुकी हुई आई वह दिल कबाब
थामी लरज़ते हाथों से रहवार की रिकाब
घोड़े प जलवा गर हुये शाहे फ़लक जनाब
बैतुश्शरफ़ में फिर गई वह मिस्ले आफ़ताब
जिसका ये ज़िक्र है वह निवासी नबी की थी
ज़ैनब, बहन हुसैन की, बेटी अली की थी

रावी न0 2—: इमामे हुसैन ने तलवार अलम की, एक ताज़ा दम सिपाही की तरह दुश्मन पर टूट पड़े और करबला का सब से ख़ूँरेज़ मारका शुरूअ़ हुआ।

रावी न0 1—: मैदाने जंग में मुतलातिम समुंद्र का सा शोर था लेकिन ख़यामे हुसैनी के अंदर मंज़र दूसरा था।

रावी न0 2—: यहाँ प्यास से रोते हुये बच्चे ख़ामोश हो चुके थे और बीवियाँ धड़कते हुऐ दिलों के साथ मैदान की तरफ़ से आती हुई आवाज़ें सुन रही थीं।

रावी न0 1—: यक बयक मैदान में ख़ामोशी फैल गई और जनाबे ज़ैनब घबराकर खेमे से बाहर निकल आई उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि इमामे हुसैन का सरतन से जुदा कर के नेज़े पर बलन्द किया जा रहा है और दुश्मन के सवार जलती हुई मश्अलें लिये अहले हरम के खेमों की तरफ झपटे चले आ रहे हैं।

रावी न0 2—: जनाब—ए—ज़ैनब ने देखा कि दुश्मन ख़ेमे के अंदर आ गया है, ख़ेमे लुट रहे हैं, ख़ेमे जल रहे हैं, सरासीमः औरतें और रोते हुवे बच्चे जलते हुवे खेमों से बाहर निकल रहे हैं, यहाँ तक कि खेमे ख़ाली हो कर ज़मीन की तरफ़ झुकना शुरू हुए।

रावी न0 1—: और दुश्मन ने देखा कि जनाबे ज़ैनब जलते हुवे खेमों से बाहर निकलीं, अहले हरम को और सहमे हुए बच्चों को एक जगह जमा किया और फिर जलते हुए खैमों में दाख़िल हो कर आग और धुवें के बादल में ग़ायब हो गईं।

रावी न0 2—: दुश्मन हैरान था कि क्या हुसैन की मातमदार बहे न भाई के ग़म में जल के मर गयी।

रावी न0 1—: लेकिन कुछ देर बाद दुश्मन ने देखा कि

धुवें और शोलों की दबीज़ चादरों के पीछे से ज़ैनब बिन्ते अली, इमामे हुसैन (अ0) की आख़िरी निशानी और बीमार भतीजे सय्यदे सज्जाद को पीठ पर उठाये हुए नमूदार हुई।

रावी न0 2—: कूफ़े और शाम के बाज़ारों में ज़ैनब—बिन्ते अली (अ0) की झुकी हुई आँखें यह सारे मंज़र देख रही हैं उनकी बलन्द आवाज़ तमाशाईयों के मजमे को ख़ामोश करती चली जा रही है और वह तमाशाई भी देख रहे हैं जो ज़ैनब ने देखा।

रावी न0 1—: और अगर ज़ैनब बिन्ते अली (अ0) की यह आवाज़ कूफ़े और शाम के बाज़ारों में बलन्द न होती तो किसी को मालूम भी न होता कि दसवीं मुहर्रम को करबला में क्या हुआ था।

मदहे उम्मे कुल्सूम

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी

ज़ैनब की साथी कुल्सूम
शैह की बहेन अच्छी कुल्सूम
अज़्मो हिम्मत की पैकर
हैदर की बेटी कुल्सूम
सिरते ज़हरा की सूरत
अहमद की प्यारी कुल्सूम
ख़ानए ग़म में रहती है
शाह की दुख्यारी कुल्सूम
ज़ुल्म को बिस्मिल कर डाला
ऐसा हक़ बोली कुल्सूम
फ़िक्रो अमल में बिल्कुल है
माँ सी, नानी सी कुल्सूम
दर्से शहादत अब भी नदा
हमको हैं देती कुल्सूम

